.ज्योतिष की दृष्टि से नवग्रह के प्रभाव एवं उनके उपचार

यह सृष्टि आदि–अनादि कालों से स्थापित है। समय–समय पर कुछ भौगोलिक घटनाक्रम से सृष्टि के कुछ घटकों में परिवर्तन होता रहता है। किन्तु इस सृष्टि का समूल कभी ना तो नष्ट हुआ है और ना ही कभी सम्पूर्ण नष्टीकरण की सम्भावनाएँ हैं। प्रकृति द्वारा प्रदत्त विभिन्न धरोहरों एवं विद्याओं के परिशोधन एवं विश्लेषण हेतु समय–समय पर ईश्वर प्रदत्त शक्तियों के स्वामी कुछ विद्वान एवं ऋषि मुनियों द्वारा अपने अपने क्षेत्रों में कई परीक्षण एवं अनुसंधान कर अपने आनी वाली पीढ़ी के हितार्थ कुछ निष्कर्ष दिये हैं। इन निष्कर्षो से ही कुछ सिद्धान्त, नियम, कायदे एवं तरीके प्रारम्भ हुए हैं जिन्हें हम आज अपने हित के लिए प्रयुक्त करते हैं। इन्हीं विषयों एवं सिद्धान्तों में एक महत्वपूर्ण विषय है ज्योतिष। एक विस्तृत पृष्ठभूमि वाले इस विषय पर जितना चिन्तन एवं मनन किया जाये उतना ही कम है। वैसे तो ज्योतिष क्षैत्र के विभिन्न आचार्यो ऋषि भृगु, आचार्य वराहमिहिर, महर्षि गर्ग जैसे कई विद्वानों के महत्वपूर्ण योगदान रहे हैं किन्तु वर्तमान में प्रचलित ज्योतिष के प्रणेता ऋषि पराशर रहे हैं, जिन्होंने वर्तमान ज्योतिष में विशोंतरी महादशा, अर्न्तदशा, प्रत्यान्तर, सूक्ष्मान्तर एवं प्राणान्तर जैसी पद्धतियों का वर्तमान गोचर एवं जन्मकालिक ग्रहों की स्थिति के आधार पर विश्लेषण करने की युक्ति लिपिबद्ध की एवं जो आज भी लाखों करोड़ों लोगों के हितार्थ उपयोग में ली जा रही है। इसी ऋृखंला में ऋषि जैमिनी के योगदान को भी कभी नहीं भुलाया जा सकता जिन्होंने ऋषि पराशर की पद्धति में कुछ नवीनता लाते हुये कारकांश लग्न पदलग्न एवं उपपदलग्न जैसी प्रणालियों को उसमें जोड़कर उस पद्धति की विश्वसनीयता को ओर अधिक प्रमाणिक बना दिया।

चन्द्रमा :- ज्योतिष शास्त्र में किसी जातक के जीवन के सम्पूर्ण विश्लेषण के लिये उसने किस नक्षत्र एवं योग में जन्म लिया है ? जन्म के समय कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की तिथि कौनसी थी ? जन्म के समय कौनसा योग है ? जन्म के समय कौनसा लग्न उदित हो रहा है एवं चन्द्रमा किसी राशि में भ्रमण कर रहा है आदि बातों की जानकारी के साथ–साथ जातक की लग्न कुन्डली, नवांश, चलित एवं षोडशवर्ग कुण्डिलियों का विश्लेषण परमावश्यक होता है। चूँकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर यह माना जाता है कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में 72 प्रतिशत जल होता है एवं जल की स्थिति से जातक का मन प्रभावित होता है एवं चन्द्रमा जातक के मन को प्रभावित करता है अतः चन्द्रमा के बल से जातक की मानसिक क्षमताओं एवं उसके भविष्य का काफी कुछ आंकलन किया जा सकता है। इसी कारण ज्योतिष में जन्म लग्न के साथ साथ चन्द्र लग्न के विश्लेषण की भी परम्परा है । शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा के बल को श्रेष्ठ माना गया है, यदि लग्न कुण्डली में चन्द्रमा किसी पापग्रह से पीड़ित न हो तो इस अवधि में पैदा हुए जातकों का मानसिक स्तर काफी सुदृढ होता है । ऐसे जातक अपनी मानसिक क्षमताओं के सहारे कई नई खोजें एवं सिद्धान्त प्रतिपादित करने में सक्षम होते हैं । इसके विपरीत यदि जातक का जन्म कृष्ण पक्ष की पष्ठी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथी तक के मध्य

हुआ हो तो ऐसे जातकों का मानसिक बल क्षीण होता है ऐसे में यदि लग्न कुण्डली में उनका चन्द्रमा राहु केतु शनि आदि पापग्रहों के प्रभाव में आ जायें तो ऐसे जातक जीवन में मानसिक रोग, अवसाद, एवं शीतजनित व्याधियों से ग्रसित होते हैं। चन्द्रमा की चर्चा के दौरान यह बात स्पष्ट कर देना अधिक उचित होगा कि तिथियों से चन्द्रमा के बलाबल के साथ लग्न कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति का विश्लेषण भी आवश्यक है । लग्न कुण्डली में चन्द्रमा लग्न, पष्ठ एवं एकादश भाव में हो तो जातक का **जन्म सोने के पाये** में माना जाता है जो कि मध्यम फलदायक होता है ऐसा जातक बाल्यावस्था में रोगी रहते हैं । लग्न कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, एवं नवम भाव में हो तो जातक का जन्म **रजत पाद** में माना जाता है । रजत पाद में जातक का जन्म सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । चन्द्रमा यदि पापप्रभाव में ना हो तथा जातक के जन्म की महादशा अर्न्तदशा योगकारक ग्रह की हो तो जन्म के साथ ही शुभ प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है तथा जातक सम्पूर्ण जीवन आनन्द से व्यतीत करता है । यदि चन्द्रमा लग्न कुण्डली के तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव में हो तो जातक का जन्म **तांबें के पाये** माना जाता है जो कि श्रेष्ठ है । ऐसे जातक अपने जीवन में काफी उन्नति करता है । यदि जातक के जन्म के समय चन्द्रमा चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भाव में हो तो जातक का जन्म **लौहपाद** में माना जाता है। ऐसे जातक की बाल्यवस्था काफी पीड़ाकारक रहती है । जातक को पैरों सम्बन्धी तकलीफ, श्वांस रोग, एलर्जी आदि व्याधियों का सामना करना पड़ता है । ऐसे चन्द्रमा पर यदि पापग्रह शनि, राहु, केतु अथवा मंगल का प्रभाव हो तो पीड़ा ओर अधिक भयावह हो सकती है ।

जातक का चन्द्रमा योगकारक श्रेष्ठ बलशाली,सौम्य ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होकर यदि नवम, दशम अथवा एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा हो अथवा उक्त तीनों में से किसी भाव पर उच्च का होकर बैठा हो तो ऐसा जातक दूरदृष्टि एवं सकारात्मक कल्पनाशीलता लिये हुये होते हैं ऐसे जातक के रोजगार में चन्द्रमा का महत्वपूर्ण योगदान होता है । ऐसे जातक जलतत्व से संबधित एवं सफेद वस्तुओं के व्यवसाय में काफी सफलता अर्जित करते हैं । यदि चन्द्रमा के साथ साथ शुक्र भी योगकारक होकर उक्त लिखित स्थानों को दृष्टि अथवा युक्ति से प्रभावित करता हो तो जातक कला के श्रेत्र में काफी प्रसिद्धि पाते हैं । प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से ऐसे जातक निश्चित रूप से कला क्षैत्र से जुडे हुए होते हैं। चन्द्रमा लग्न कुंडली में यदि गुरू की युक्ति अथवा परस्पर दृष्टि से युक्त हो तो ये **गजकेसरी योग** का निर्माण करता है ऐसा जातक आजीवन सानंद व्यतीत करता है एवं ऐसे जातक अपने जीवन में सामाजिक हितार्थ ऐसा कुछ करते हैं कि उनकें निर्वाण के पश्चात भी लोग उन्हें याद रखें । लग्न कुण्डली में चन्द्रमा की मंगल से युक्ति **महालक्ष्मी योग** का निर्माण करती है । यदि जातक की कुंडली में योगकारक होकर चन्द्र–मंगल की युक्ति कुंडली के योगकारक भावों पर हो तो जातक को आजीवन धन की कोई कमी नहीं रहती एवं जातक के पास स्थिर सम्पति काफी मात्रा में रहती है। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत चन्द्रमा की महादशा 10 वर्ष की मानी गई है । चन्द्रमा के तीन नक्षत्र हैं रोहिणी, हस्त एवं श्रवण । रोहिणी नक्षत्र के स्वामी स्वयं ब्रह्म जी हस्त नक्षत्र के स्वामी सूर्यदेव एवं श्रवण नक्षत्र के स्वामी विष्णु देव को माना गया है। इन नक्षत्रों में जन्में जातकों के जीवन पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहता है।

उपचारः–

जातक के जन्म के समय चन्द्रमा योगकारक अर्थात लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर बलहीन या पापप्रभाव शनि राहू केतु आदि से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे 12 वर्ष से कम आयु के जातक को मोती लगा हुआ चांदी का चन्द्रमा शुक्ल पक्ष के सोमवार की रात्रि को लाभ शुभ अमृत के चौघड़िये में चन्द्रमा के मंत्र ऊ सोम सोमाय मंत्र'से अभिमंत्रित कर पीले धागे में गलें में धारण करवाना चाहिये । जातक यदि 12 वर्ष की आयु से अधिक का हो तो सवा तीन रत्ती का मोती एवं 18 वर्ष की आयु से अधिक का हो तो सवा पॉच रत्ती का मोती चॉदी में सीधे हाथ की कनिष्ठा अंगुली में अभिमंत्रित कर धारण करवाना चाहिये । इसी के साथ यदि जातक स्वयं सक्षम हो तो प्रतिदिन रात्रि के समय चॉदी अथवा स्टील के गिलास में कच्चादूध, सफेद पुष्प एवं अक्षत सहित चन्द्रमा के मंत्र" ऊ सोम सोमाय नमः"के 11 अथवा 21 जाप करते हुए चन्द्रमा को अर्ध्य दें । किसी जातक का चन्द्रमा तृतीयेश, पष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादेश होकर पापप्रभाव में हो तो चन्द्रमा कुण्डली में जिस स्थान पर बैठा होगा उस स्थान अथवा उस स्थान का प्रतिनिधित्व करने वाले संबंधी को पीड़ित करेगा । ऐसे जातकों को चन्द्रमा का रत्न धारण नहीं करना चाहिये अपितु उक्त लिखित प्रकिया से चन्द्रमा को अर्ध्य दिया जाना चाहिये। साथ ही ऐसे जातक को सवा पाव अथवा सवा किलो की निर्धारित मात्रा से चन्द्रमा से संबंधित सफेद वस्तु यथा दूध, दही, घी, चावल आदि को प्रत्येक सोमवार शिवालय के पुजारी को दान देना चाहिये। ऐसा इसलिये आवश्यक है क्योंकि यदि चन्द्रमा जातक की कुण्डली में अच्छे स्थान का स्वामी होकर यदि बलहीन ओर पापप्रभाव में हो तो उसका बल बढ़ाना चाहिये जो कि रत्न एवं अर्ध्य या पूजा प्रकिया से बढ़ाया जा सकता है । इसके विपरीत यदि जातक का चन्द्रमा अकारक अर्थात त्रिक भावों का स्वामी है तथा बलहीन एवं पाप प्रभाव में हो तो ऐसे जातक के चन्द्रमा के बल को क्षीण किया जाना चाहिये जो कि पूजा प्रकिया अथवा दान से सम्भव है। जातक की कुण्डली में चन्द्रमा चाहे योगकारक हो अथवा त्रिक भावों का स्वामी हो यदि चन्द्रमा पापप्रभाव में हो तो गोचर में चन्द्रग्रहण के समय चन्द्रमा के मंत्रों की आराधना एवं शिव आराधना विशेष लाभकारी होती है । चन्द्रमा की चर्चा के समय यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि चन्द्रमा किसी भी जातक की कुण्डली में उसकी माता का कारक होता है यदि चन्द्रमा पापप्रभाव में हो शनि राहु केतु की दृष्टि या युक्ति में हो तो ऐसे जातक की माता का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता । जातक द्वारा चन्द्रमा के यथा अनुसार उपचार करने पर जातक की माता के स्वास्थ्य पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही जिस जातक का चन्द्रमा पापप्रभाव में हो उसको चन्द्रमा की अनुकूलता के लिये अपनी माता की आज्ञा का पालना करना चाहिये इससे चन्द्रमा के कुप्रभाव से बचा जा सकता है । जिस जातक का जन्म लौहपाद में हुआ है ऐसे जातक की पीड़ाओं की न्यूनता के लिये जातक के अभिभावकों को शनि से संबधित अग्रलिखित पॉच वस्तुओं को संग्रहित कर किसी शनि अमावस्या अथवा किसी भी शनिवार को डाकौत को दान देना चाहियें :–(1) सवा मीटर कोरा काला कपड़ा (2) सवा किलो आखे (साबुत) उडद(3) सवा किलो तिल्ली का तेल (4)सवा किलो काले

तिल एवं (5) एक लोहे की कढ़ाई । चन्द्रमा की अनुकूलता हेतु शिव–आराधना सर्वश्रेष्ठ उपचार है ।

सूर्य:- जातक की जन्म कुण्डली में **सूर्य** जातक की आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है । सूर्य को ग्रहों के राजा की संज्ञा दी गई है । सूर्य को नैसर्गिक रूप से पिता का कारक ग्रह माना गया है । साथ ही सूर्य पुरूष जातक के दायें नैत्र का एवं स्त्री जातक के बांये नैत्र का प्रतिनिधित्व करता है । सूर्य से जातक के सम्मान का विश्लेषण किया जाता है । सूर्य जातक की आत्मा एवं हृदय का कारक ग्रह माना गया है । सूर्य यदि जातक की कुण्डली में पापप्रभाव में हो तो ऐसे जातक सिरदर्द, नैत्र विकार, चर्मरोग आदि से ग्रसित रहते है । जिस जातक की कुण्डली में सूर्य स्थिति और दृष्टि से लग्न कुंडली के षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम भाव को प्रभावित करता है ऐसे जातकों को बालों सम्बन्धी रोग की अधिकता देखी गई है । कुण्डली में सूर्य यदि राहु, शनि अथवा केतु के साथ हो तो ऐसे जातक को अपने पिता का पूर्ण सहयोग नहीं मिलता ऐसे जातकों के सिर से पिता का साया जल्दी ही उठ जाता है यदि ऐसा ना हो तो पिता–पुत्र में सैद्धान्तिक मतभेद बनें रहते हैं। शास्त्रों में दियें वर्णनानुसार यदि जातक की लग्न कुंडली में सूर्य स्वग्रही या मित्रग्रही हो तथा उस पर कोई पापप्रभाव नहीं हो तो ऐसा जातक अपनी बात का धनी, शासनसत्ता युक्त , अच्छे आचरण वाला होता है , इसके विपरीत सूर्य यदि पापप्रभाव में अर्थात सूर्य पर अपने शत्रु राहु केतु शनि आदि का प्रभाव हो तो ऐसे जातक के जीवन में संघर्षों की अधिकता रहती है । जातक की इच्छा शक्ति क्षीण होती है । सूर्य का शासन सत्ता से सीधा संबध होता है जिस जातक की कुण्डली में सूर्य योगकारक ग्रह होकर स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो एवं जातक के कर्मक्षैत्र पर उसका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव हो तो ऐसा जातक शासन सत्ता में भागीदार होता है ऐसे जातक राजकीय सेवा में राजपत्रित पदों पर सेवारत रहते है । ऐसे जातकों के पिता एवं वे स्वयं एक सम्मानित जीवन जीते हैं । सूर्य यदि योगकारक ग्रह यथा लग्नेश, पंचमेश, नवमेश, दशमेश आदि होकर स्वराशि (सिंह) अथवा मित्र राशि अथवा उच्च राशि (मेष) में होकर लग्न से तृतीय, षष्ठ, दशम अथवा एकादश भाव में हो तो ऐसा सूर्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य यदि लग्नेश होकर उक्त स्थिति में हो तो ऐसा जातक सिद्धान्तवादी, नियम एवं तरीकों की अनुपालना करने वाला एवं समाज को एक नई दिशा देने वाला होता है। यदि सूर्य पंचमेश होकर उक्त स्थिति में हो तो ऐसा जातक कुशाग्र बुद्धि होता है एवं ऐसे जातक की प्रथम संतान भी काफी मेधावी होती है । यदि सूर्य नवमेश होकर उक्त स्थिति में होतो ऐसे जातक का भाग्य सूर्य के समान चमकीला होता है । उसकी प्रतिभा चारों ओर फैलती है । दशमेश होकर सूर्य उक्त स्थिति में हो तो जातक का शासन सत्ता से सीधा सम्बन्ध बनता है । ऐसा जातक स्वयं एक राजपत्रित अधिकारी होता है एवं उसके अधीन अनेक लोग कार्य करते हैं । उक्त स्थितियो के विश्लेषण में सूर्य के षड़बल एवं अंशादि के बारे में भी स्पष्ट जानकारी की जानी चाहिये । जातक की कुंडली में सूर्य का षडबल में 1.3 से 1.7 के मध्य हो एवं अंशों के आधार पर सूर्य 5 अंशों से अधिक एवं 20 अंशों के मध्य हो तो उक्त लिखित स्थितियाँ निश्चित रूप से देखने को मिलती है । उक्त स्थिति के साथ–साथ सूर्य यदि अपने मित्र मंगल, बुध,

बृहस्पति से युक्त हो तो जातक निश्चित रूप से बड़ी सफलताएँ अर्जित करता है । सूर्य यदि अपने मित्र मंगल के साथ युक्त हो एवं कुण्डली में दोनों ग्रह योगकारक होकर नवम दशम एवं एकादश भाव पर युक्ति अथवा दृष्टि से प्रभाव डाल रहें हो साथ ही पंचमेश भी बलशाली हो, तो ऐसा जातक निशचित रूप से एक सफल चिकित्सक होता है एव साथ ही जातक सर्जरी विशेषज्ञ होता है । यदि जातक का पंचमेश (शिक्षाकारक ग्रह) क्षीण हो तो जातक को उक्त फल प्राप्ति में विलम्ब एवं बाधा आती है । जिनका पंचमेश क्षीण हो किन्तु सूर्य मंगल की स्थिति उक्त लिखित अनुसार हो ऐसे जातकों को अग्नि तत्व संबधी व्यवसायों में विशेष सफलता प्राप्त होती है । ऐसे जातक विद्युत संबधी उपकरणों चिकित्सा संबंधी व्यवसाय में काफी सफल होते हैं । यदि सूर्य अपने मित्र बुध के साथ हो एवं नवम, दशम, एकादश भाव को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हो तो ऐसे जातक बैंक एवं बीमा कंपनियों में उच्च पदों पर होते हैं । ऐसे जातक कन्सलटेंसी के व्यवसाय में काफी सफल होते देखे गये है । बुध वाणिज्य प्रधान ग्रह है सूर्य साथ में युक्त होकर बुध के गुणों कों चारों ओर फैलाते है । सूर्य एवं बुध की युक्ति को बुधादित्य योग कहा गया है ऐसे योग वाले व्यक्ति बैंक एवं बैंकिंग व्यवसाय के अतिरिक्त पत्रकारिता एवं लेखनी के क्षैत्र. में काफी नाम कमाते है । सूर्य अपने मित्र गुरू कें साथ हो तो यह **गजकेसरी योग** की श्रेणी में आता है । सूर्य एवं गुरू की युक्ति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नवम दशम एवं एकादश भाव में अपना प्रभाव डालती है तो ऐसे जातक शिक्षा. क्षैत्र में राजपत्रित पदों पर विभूषित होते है साथ ही ऐसे लोगों को शिक्षा क्षैत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु शासन एवं शिक्षाविदों द्वारा सम्मानित किया जाता है । उक्त स्थिति के अतिरिक्त यदि सूर्य अपने तीनों मित्रों मंगल, बुध एवं गुरू के साथ युक्त हो एवं उक्तानुसार स्थिति हो तो ऐसा जातक अपने जन्म स्थान के साथ साथ अपनें प्रांत एवं अपने राष्ट्र में भी अपनी योग्यता की छाप छोड़तें है । बशर्ते की उक्त ग्रह वकी ना हो नाहि किसी पापप्रभाव में हो एवं जातक की युवा अवस्था में ही सूर्य अथवा सूर्य के उक्त मित्रों में से किसी ग्रह की महादशा एवं अर्न्तदशा हो । साथ षडबल एवं अंशादि के दृष्टिकोण से सभी ग्रह बलशाली हो । सूर्य की विशोंतरी महादशा 6 वर्ष की मानी गई है । **कृतिका, उत्तराफाल्गुनी तथा उतराषाढा** सूर्य के नक्षत्र है इन नक्षत्रों में जन्में व्यक्तियों पर सूर्य का प्रभाव विशेष रूप से देखने को मिलता है ।

उपचारः–

जातक की कुण्डली में सूर्य कुण्डली का योगकारक ग्रह लग्नेश ,पंचमेश, नवमेश अथवा दशमेश होकर पाप प्रभाव में हो तो ऐसे जातक यदि 12 वर्ष की आयु से छोटी आयु का हो तो उसे स्वर्ण की सूर्य प्रतिमा बनाकर पीले धागे अथवा सोने की चेन में रविवार के दिन लाभ, शुभ, अमृत के चौघड़ियें में "ऊ घृणि सूर्याय नमः" मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करवाना चाहिये । यदि जातक 12 वर्ष से 18 वर्ष की आयु के मध्य है तो ऐसे जातक को सवा तीन रत्ती का एवं 18 वर्ष से अधिक आयु की स्थिति में सवा पांच अथवा सवा सात रत्ती का माणिक्य सोने में बनवाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में उक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर रविवार को धारण करना चाहिये ।

इस के साथ साथ जातक को ताम्रपात्र में जलभरकर लालपुष्प, लालचंदन, कुमकुम एवं गुड डालकर अग्रलिखित मंत्र "ऊ घृणि सूर्याय नमः के 11 अथवा 21 मंत्रो से प्रतिदिन सूर्य को अर्ध्य देना चाहिए । जातक की कुण्डली में सूर्य यदि तृतीयेश, पष्ठेश, अष्टमेश अथवा व्ययेश होकर किसी पाप प्रभाव शनि राहु केतु की युक्ति अथवा दृष्टि में हो तो ऐसे जातकों को ताम्रपात्र में जल भरकर लालपुष्प, लालचंदन, कुमकुम एवं गुड डालकर अग्रलिखित मंत्र "ऊ घृणि सूर्याय नमः" के 11 अथवा 21 मंत्रो से प्रतिदिन सूर्य को अर्ध्य देना चाहिए साथ ही ऐसे जातकों को सूर्य से संबधित वस्तुओं का प्रत्येक रविवार एक निर्धारित मात्रा में दान देना चाहियें । ऐसे जातकों को सवा पाव या सवा किलो की निर्धारित मात्रा में सूर्य का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुओं यथा गेहूँ, गुड आदि का दान करना चाहिये । ऐसे जातकों के लिये सूर्य का रत्न माणिक्य धारण करना उचित नहीं होता । जिन जातकों का सूर्य त्रिक भावों का स्वामी हो ऐसे जातकों को गोचर में सूर्यग्रहण की स्थिति में सूर्य की विशेष आराधना करनी चाहिये तथा सूर्य से संबधित वस्तुओं का दान करना चाहिये । जो जातक नियमानुसार सूर्य आराधना करते है उनके आत्मबल में विशेष वृद्धि देखने को मिलती है साथ ही सूर्य आराधना से जातक के पिता को भी लाभ मिलता है । शासन सत्ता से होने वाले कामों में आने वाले अवरोध दूर होते है साथ ही नैत्र ज्योति में वृद्धि होती है । सूर्य आराधना के समय जातक को अपने हाथों को ऊपर करके जल की धारा में सूर्यदेव के दर्शन करते हुए सूर्य को अर्ध्य देना चाहिए साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये कि सूर्य को अर्ध्य के रूप में चढ़ाया गया जल स्वयं के या किसी अन्य के पैरों में न आये।

बृहस्पति :- ज्योतिष की विवेचना के समय तृतीय महत्वपूर्ण ग्रह देवगुरू **बृहस्पति** है । बृहस्पति नैसर्गिक रूप से शिक्षा के कारक ग्रह है । साथ ही किसी कन्या की कुण्डली में देवगुरू बृहस्पति से उस कन्या के वैवाहिक जीवन के बारे में काफी कुछ जानकारी प्राप्त की जा सकती है । देवगुरू बृहस्पति के पास किसी व्यक्ति के पेट, लीवर, अमाशय आदि का स्वामित्व भी है । बृहस्पति की स्थिति से जातक की वित्तीय स्थिति की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है । बृहस्पति की स्थिति एवं लग्न कुण्डली के पंचम एवं नवम भाव की स्थिति एवं पंचमेश एवं नवमेश की स्थिति के आधार पर इस बात का आंकलन किया जा सकता है कि जातक आस्तिक होगा अथवा नास्तिक । उक्त स्थिति का विश्लेषण कर यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि जातक को किस देव की आराधना करनी चाहिए । बृहस्पति को बडे भाई का कारक ग्रह भी माना गया है । देव गुरू बृहस्पति जिस जातक की कुण्डली में पापप्रभाव में हो अथवा नीच का हो ऐसे जातकों को पुत्र संतान प्राप्ति में काफी बाधाओं का सामना करना पडता है अर्थात ऐसे जातकों को पुत्र प्राप्ति या तो काफी विलम्ब से होती है तथा यदि पंचम भाव एवं पंचमेश भी दोषयुक्त हो तो ऐसा जातक पुत्रविहीन होता है । बृहस्पति को चन्द्रमा की राशि कर्क में उच्च का एवं शनि की राशि मकर में नीच का माना गया है । शास्त्रों में यह भी उल्लेखित है कि "स्थान हानि करां जीवा" अर्थात गुरू जहॉ बैठा हो उस स्थान की क्षति करता है । किन्तु यदि उक्त कथन को वर्तमान

परिपेक्ष में देखा जाए तो यह स्थिति तभी आती है जब गुरू किसी पाप प्रभाव में अथवा नीच का हो । यदि गुरू स्वराशि (धनु अथवा मीन) या उच्च राशि (कर्क) में हो तो उक्त कहावत चरितार्थ नहीं होती । देवगुरू बृहस्पति हेतु शास्त्रों में उल्लेखित है कि यदि गुरू किसी जातक की कुण्डली में स्वराशि अथवा उच्च राशि का होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठा हुआ हो तो ऐसा गुरू कुण्डली के लाखों दोषों को दूर करता है । बृहस्पति लग्न कुण्डली में स्वराशि अर्थात धनु अथवा मीन राशि में या फिर अपनी उच्च राशि कर्क में होकर लग्न कुण्डली के केन्द्र स्थानों में बैठा हो तो ज्योतिष के पंचमहापुरूष योग में से एक **हंस योग** का निर्माण करता है । ऐसे योग में उत्पन्न जातक सात्विक, उच्च शिक्षा दीक्षा युक्त एवं श्रेष्ठ आचरण करने वाला होता है । गुरू अपने स्थान से पंचम, सप्तम, एवं नवम् भाव पर पूर्ण दृष्टि से देखता है । गुरू की दृष्टि में सौम्यता होती है । लग्न कुण्डली में गुरू की स्थिति तृतीय, षष्ठ, दशम एवं एकादश भाव में अच्छी मानी गई है क्योंकि तृतीय भाव में बैठा गुरू पंचम दृष्टि से जायाकारक स्थान सप्तम भाव, सप्तम दृष्टि से भाग्य स्थान अर्थात लग्न कुण्डली के नवम भाव एवं नवम दृष्टि से लग्न कुण्डली के एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता है जो कि उन्नति कारक होती है । इसी प्रकार षष्ठ भाव में बैठा गुरू पंचम् दृष्टि से लग्न कुंडली दशम भाव, सप्तम दृष्टि से लग्न कुण्डली के द्वादशभाव पर दृष्टि डाल जातक की धर्मस्थान पर यात्रा एवं अच्छे कार्यो में व्यय करवाता है, षष्ठ का गुरू नवम दृष्टि जातक के धनभाव एवं कुटुम्ब भाव पर डालकर उसकी वृद्धि करता है । इसी प्रकार दशम भाव में बैठा गुरू अपनी पंचम दृष्टि जातक की लग्न कुण्डली के द्वितीय भाव सप्तम दृष्टि जातक के चतुर्थ पर डालकर जहाँ इन दोनों भावों के फलों में वृद्धि करता है वही नवम दृष्टि जातक की लग्न कुण्डली के षष्ठ भाव में डालकर जातक के ऋणों एवं रोगों में न्यूनता लाता है । इसी प्रकार जातक की कुण्डली में एकादश भाव में बैठा गुरू अपनी पंचम् दृष्टि से जातक की लग्न कुण्डली के तृतीय भाव पर दृष्टि डालकर जातक के बल पराक्रम को सकारात्मक ढंग से नियंत्रित रखता है। जातक को अभिमानी नहीं होने देता। वही सप्तम दृष्टि पंचम भाव पर एवं नवम दृष्टि सप्तम भाव पर डालकर उस स्थान से संबधित फलों में वृद्धि एवं शुद्धि करता है । देवगुरू बृहस्पति यदि अपने मित्रों चन्द्रमा, सूर्य, मंगल आदि के साथ युक्ति अथवा दृष्टि संबध बना लेते हैं तो जातक के जीवन में सकारात्मक वृद्धि होती है । देवगुरू बृहस्पति यदि जातक की कुण्डली में लग्नेश, पंचमेश, नवमेश अथवा दशमेश होकर लग्न, तृतीय, षष्ठ, दशम अथवा एकादश भाव में बैठे हो तथा योगकारक मित्रग्रह चन्द्रमा, सूर्य अथवा मंगल से युक्त हो तो जातक के जीवन में धन का कभी अभाव नहीं रहता एवं ऐसे जातक की ख्याति चहुँओर फैलती है । जातक की कुण्डली में बृहस्पति यदि लग्न एवं पंचम दोनों भाव पर अपना सुप्रभाव डालता है एवं इस स्थान पर बृहस्पति के शत्रु ग्रह यथा शनि राहु केतु आदि का प्रभाव न हो तो जातक पूर्वदृष्टा होता है, अर्थात जातक को आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है । उक्त के विपरीत यदि जातक की कुण्डली में गुरू नीच राशि अर्थात मकर राशि में साथ ही गुरू राहु से युक्त हो चाण्डाल योग बना रहा हो तो ऐसा जातक सार्वजनिक तौर पर धार्मिक किन्तु आन्तरिक से मलेच्छ होता है । गुरू नीच राशि में हो एवं पापप्रभाव में हो तथा जातक की कुण्डली का पंचमभाव भी पापप्रभाव में हो एवं पंचमेश नीच का हो या बलहीन होकर

षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में बैठा हो एवं कुटुम्बभाव (द्वितीयेश) भी निर्बल हो तो ऐसी स्थिति स्त्रीजातक की कुण्डली में होने पर जातिका का विवाह नहीं होता एवं होता है तो वैवाहिक सुख में बाधा रहती है । पुरूष जातक की कुण्डली में उक्त स्थिति हो तो ऐसे जातक का कुटुम्ब आगे नहीं चलता अर्थात जातक संतानहीन होता है । गुरू एवं शनि की युक्ति जातक की कुण्डली में जिस स्थान पर होती है जातक को उस स्थान से संबधित पूर्ण परिणाम प्राप्त नहीं होते । उक्त युक्ति जातक के लग्न अथवा पंचम भाव पर हो तो जातक सदैव अर्न्तद्वन्द मे रहेगा । गुरू कुंडली में अकारक ग्रह होकर पाप प्रभाव में हो एवं लग्न कुंडली के पंचम, षष्ठ भाव अथवा अष्टम भाव को प्रभावित करता है तो ऐसे जातक को उदर रोग होता है जातक पीलियॉ, एपेन्डिक्स, एवं लीवर संबधी रोगों से पीडित होता है । गुरू की उक्त स्थिति जातक के बडे भाई के लिये भी पीडाकारक होती है । साथ ही गुरू की उक्त स्थिति के कारण जातक की शिक्षा–दीक्षा में भी व्यवधान उत्पन्न होते हैं । **पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभादपद** यह तीन बृहस्पति के नक्षत्र है । पुनर्वसु नक्षत्र के स्वामी अदिति, विशाखा नक्षत्र के स्वामी इन्द्राग्नि एवं पूर्वाभाद्रपद के स्वामी अजैकपद है । जिन जातकों का जन्म इन नक्षत्रों में होता है उन जातकों पर गुरू का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है ।

उपचारः–

जातक की कुण्डली में बृहस्पति लग्नेश, पंचमेश, नवमेश अथवा दशमेश होकर पापप्रभाव में अर्थात राहू केतु शनि आदि से युक्त या दृष्ट हो, नीच राशि में हो अथवा षडबल में कमजोर हो तो ऐसे जातकों को 12 वर्ष की कम आयु तक सवा तीन या सवा पॉच रत्ती का एवं 18 वर्ष से अधिक की आयु के जातको को सवा सात रत्ती का पीला पुखराज सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरूवार के दिन सूर्योदय से डेढ घंटे की अवधि में सोने में "ऊ बृं बृहस्पतयें नम":के मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करना चाहिये । साथ ही ऐसे जातकों को उक्त मंत्र की एक माला नित्य प्रति करनी चाहिये । उक्त मंत्र के 11 अथवा 21 बार जाप करतें हुऐं केल वृक्ष को जल चढ़ाना चाहियें । जिन जातकों की कुण्डली में बृहस्पति त्रिक भावों अर्थात षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भावों का स्वामी होकर यदि किसी शुभ भाव में चला गया हो अथवा किसी पाप प्रभाव में हो अथवा नीच राशि में हो तो ऐसे जातकों को **"ऊ बृं बृहस्पतयें नम"**:के मंत्र की एक माला नित्य प्रति करनी चाहिए। साथ ही ऐसे जातकों को उक्त मंत्र के 11 अथवा 21 बार जाप करते हुए केल वृक्ष को जल चढ़ाना चाहिए। ऐसे जातकों को बृहस्पति का रत्न पुखराज कभी भी धारण नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे गुरू के नकारात्मक प्रभाव मे वृद्धि होगी । ऐसे जातकों को गुरू से संबधित वस्तुओं को दान नित्य प्रति अथवा प्रत्येक गुरूवार को करना चाहिए यथा ऐसे जातक सवा पाव या सवा किलो की एक निर्धारित मात्रा में चने की दाल कुछ गुड़ सहित एक रोटी पर रखकर प्रत्येक गुरूवार गाऐं को खिलाऐं । किसी ब्राह्मण को वस्त्रों का दान करें । मौद्रिक रूप से अक्षम बालक–बालिकाओं को पुस्तकें दिलाऐं। यथानुसार उक्त प्रकार से बृहस्पति ग्रह

के उपचार उपरांत जातक को गुरू ग्रह से प्राप्त हो रहे दुष्परिणामों में न्यूनता आती है ।

मंगल जातक की लग्न कुण्डली में सेनापति का अस्तित्व रखता है । मंगल की स्थिति से जातक के शारारिक सौष्ठव एवं उसकी इच्छाशक्ति का ज्ञान होता है । मंगल जातक की कुण्डली में निर्दिष्ठ योगों को फलीभूत करने में सहायक होता है । मंगल एनर्जी का कारक है । मंगल की क्षमताओं के अनुरूप ही जातक कार्यो के कियान्वयन हेतु सक्षम हो पाता है । मंगल रक्त का कारक है । मंगल की लग्न कुण्डली में स्थिति का विश्लेषण कर जातक के जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में काफी कुछ जानकारी सम्भव है । मंगल को जातक की कुण्डली में नैसर्गिक रूप से छोटे भाई का कारकग्रह माना गया है । शास्त्रानुसार जातक की लग्न कुण्डली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में हो तो जातक मांगलिक होता है । मंगल एक दोष न होकर एक योग है । मांगलिक व्यक्ति में कार्यक्षमताऐं काफी अधिक पाई जाती है । मांगलिक लोग बिना थके कई घंटों शारीरिक श्रम कर सकतें है जो कि सामान्य व्यक्तियों में क्षमताओं के परे होता है । मंगल मकर राशि में उच्च का एवं कर्क राशि में नीच का होता है । लग्न कुंडली के तृतीय, षष्ठ, दशम एवं एकादश भाव पर मंगल की स्थिति को उचित माना गया है । जिन व्यक्तियों की कुण्डली में मंगल एक योगकारक ग्रह होकर उच्च राशि अथवा मित्र राशि में हो एवं कुंडली के नवम दशम एवं एकादश भाव में स्थिति अथवा दृष्टि से प्रभाव डाल रहा हो तो ऐसे जातक सेना अथवा पुलिस में एक उॅचें ओहदे पर होतें है । यदि मंगल के साथ उसके मित्र सूर्य की स्थिति भी योगकारक होकर मंगल से दृष्टि युक्ति संबध बनाने वाली हो तो ऐसे जातक एक सफल सर्जन होतें है । मंगल को मूल रूप से खेलों का कारक ग्रह भी माना गया है । जिन जातकों की कुण्डली में मंगल पंचम एवं दशम भाव पर प्रभाव डाल रहा हो ऐसे जातकों रूचि खेलों में बहुत होती है । यदि अन्य ग्रह सहयोगी हो एवं जातक की युवा अवस्था में अच्छे योगकारक ग्रहों की महादशा अर्न्तदशा आ जाये तों जातक राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के खेलों में नाम कमाता है । लग्न कुडली स्वराशि (मेष, वृश्चिक) अथवा उच्च राशि मकर राशि में होकर केन्द्र में बैठा हो तो यह स्थिति पंचमहापुरूष योग में से एक **रूचक योग** का निर्माण करती है । जो कि काफी उन्नति कारक योग माना गया है इस योग वाला जातक अपनी दृढ इच्छाशक्ति एवं कार्यकियान्वयन के कारण जीवन में काफी सफल होतें देखें गयें है । साथ ही मंगल यदि स्वराशि अथवा उच्च राशि का होकर दशमभाव में बैठें तो **कुलदीपक योग** का निर्माण करता है । कुलदीपक योग का निर्माण करने वाला मंगल यदि कुण्डली में योगकारक (लग्नेश, पंचमेश, नवमेश, दशमेश) होकर बैठा हो तो ऐसा जातक अपने कुल की साख में बहुत वृद्धि करता है । अपने पूर्वजों द्वारा अर्जित की गई सम्पत्ति एवं ख्याति में वृद्धि करता है । मंगल अपने स्थान से चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम पूर्ण दृष्टि से देखता है। मंगल की दृष्टि में उर्जा होती है । लग्न कुण्डली में मंगल को तृतीय, षष्ठ, दशम एवं एकादश भाव पर उचित माना गया है । मंगल यदि उक्त में से किसी स्थान पर स्वराशि, मित्रराशि में होकर बैठा हो तो जातक के जीवन में उन्नति कारक होता है ।

उक्त के विपरीत मंगल लग्न कुंडली में यदि अपनी नीच राशि कर्क में हो अथवा अपने शत्रु राहु, शनि से युक्त हो तो जातक के जीवन को संघर्षपूर्ण बना देता है । नीच राशि का मंगल यदि जातक की लग्न कुण्डली के षष्ठ, अष्टम भाव पर दृष्टि अथवा स्थिति पर प्रभाव डालता है तो ऐसे जातक को जीवन में शल्य चिकित्सा से गुजरना पडता है । ऐसा जातक जीवन में रक्त विकार एवं चर्मरोग से पीडित रहता है । स्त्री जातक की स्थिति में मंगल यदि पापप्रभाव में हो अथवा नीच राशि में हो तो जातिका की महावारी अनियमित होती है । मंगल के साथ साथ यदि शनि एवं राहू का भी पापप्रभाव कुण्डली के षष्ठ अथवा अष्टम भाव पर हो तो जातक को कैंसर जैसे असाध्य रोग का भी सामना करना पडता है । मंगल नीच राशि, शत्रु राशि में होकर यदि जातक की कुण्डली के दशम भाव अथवा लग्न पर दृष्टि डालता है तो जातक जीवन मे लुटेरा, हत्यारा एवं लम्पट बनता है । एवं मंगल के साथ साथ राहू आदि का प्रभाव भी दशम एवं लग्न पर हो तो जातक के जीवन में एक बार कारावास की स्थिति अवश्य बनती है । जिस जातक की कुण्डली में नीच राशि का मंगल हो अथवा मंगल वकी हो या पाप प्रभाव में हो तो ऐसा जातक को छोटे भाई का सुख नहीं मिलता यदि छोटा भाई हो तो जातक के जीवन में छोटे भाई की वजह से काफी पीड़ाऐं रहती है । चूँकि मंगल जातक की कुण्डली में साहस का कारक है अतः मंगल की दूषित होने की स्थिति में जातक के आत्मबल में कमी पाई जाती है । पराशरीय पद्धति में मंगल की विशोंतरी महादशा 7 वर्ष की मानी गई है । **मृगशिरा, चित्रा एवं धनिष्ठा** मंगल के नक्षत्र माने गए हैं । उक्त में से किसी नक्षत्र में पैदा हुये जातकों पर मंगल का प्रभाव देखा जाता है ।

उपचारः–

किसी जातक की कुण्डली में मंगल यदि योगकारक ग्रह होकर अंशात्मक रूप से कमजोर हो, पापप्रभाव में हो या षड़बल में कमजोर हो अथवा सूर्य से अस्त हो तो ऐसा जातक किसी भी कार्य के कियान्वयन में सफल नहीं हो पाता । ऐसी स्थिति में मंगल के सुप्रभाव को बढ़ाने के लिये जातक को सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में सवा सात रत्ती का मूंगा मंगलवार के दिन लाभ शुभ अमृत के चौघडियें में तांबें में बनवाकर 'ऊ अं अंगारकाय नमः' के मंत्र की एक माला से अभिमंत्रित कर धारण करना चाहिये। कुण्डली के लग्नानुसार मूंगें को चॉदी अथवा सोनें में भी धारण किया जा सकता है । इसके विपरीत मंगल यदि त्रिक भावों का स्वामी को योगकारक भाव में बैठा हो तो उस भाव से सम्बन्धित फलों की प्राप्ति में व्यवधान करता है । इसी प्रकार यदि मंगल कुण्डली में यदि अकारक होकर षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम भाव पर प्रभाव डाल रहा हो तो ऐसी स्थिति में जातक को हनुमान चालीसा, बजरंगबाण, हनुमाष्टक एवं 'ऊ अं अंगारकाय नमः' के मंत्र की एक माला प्रतिदिन जाप करना चाहियें । साथ ही अकारक ग्रह मंगल के बल को क्षीण करने के लिए जातक मसूर की दाल का दान कर सकता है । लाल मुंह के बंदरों को गुड़ चने खिलायें ।

इस भौतिक जीवन में जितने भोग्य पदार्थ है इनका मूल कारक ग्रह **शुक्र** माना गया है । शुक्र ग्रह श्वेत रंग एवं स्त्री वर्ग का ग्रह है । पुरूष जातक की

कुण्डली में शुक्र को स्त्री का कारक ग्रह माना गया है । शुक्र एवं चन्द्रमा ये दो ऐसे ग्रह है जो जातक के मन को सर्वाधिक प्रभावित करतें है । शुक्र सौन्दर्य का प्रतीक है । शुक्र मीन राशि में उच्च का एवं कन्या राशि में नीच का माना जाता है । संगीत एव कला क्षैत्र पूर्णतया शुक्र से प्रभावित है । शुक्र नृत्य का कारक है । जातक की कुण्डली में षष्ठ भाव के अतिरिक्त अन्य सभी भावों में शुक्र विशेष प्रभावी रहता है । जातक की कुण्डली में शुक्र वृषभ अथवा तुला अथवा मीन राशि में होकर केन्द्र में बैठा हो तो ऐसा शुक्र **मालव्य योग** का निर्माण करता है । यदि जातक की कुण्डली में शुक्र योगकारक ग्रह होकर मालव्य योग बना रहा हो तो शुक्र की महादशा जातक के जीवन का स्वर्णिम काल होती है । पराशरीय पद्धति के अनुसार शुक्र की महादशा के लिये सर्वाधिक 20 वर्ष का समय निर्धारित किया गया है । जातक की कुण्डली में शुक्र के साथ–साथ शुक्र के मित्र ग्रह शनि एवं बुध भी योगकारक होकर पंचम अथवा दशमभाव को दृष्टि अथवा युक्ति से प्रभावित कर रहें हो तो ऐसा जातक फैशन डिजाइनिंग के क्षैत्र में काफी नाम कमाता है । अकेले शुक्र एवं शनि की लग्न पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव पर दृष्टि या युक्ति हो ता ऐसा जातक संगीत वाद्य का जानकार होता है । शुक्र एवं शनि की युक्ति सप्तम भाव पर जातक को भोग की ओर ले जाती है । शुक्र यदि अपने परम मित्र बुध के साथ जातक की कुण्डली में हो तो यह **लक्ष्मीनारायण योग** का निर्माण करता है ऐसे जातक के जीवन में धन की कोई कमी नहीं रहती । जातक की कुण्डली में द्वादश भाव में मित्र राशि का योगकारक शुक्र विद्यमान हो तो ऐसा जातक जीवन में सभी भौतिक सुखसुविधा युक्त होकर समस्त प्रकार के भोग भोगता है।

25:-उक्त के विपरीत शुक्र यदि दोषयुक्त हो षष्ठ भाव में हो अथवा योगकारक ग्रह होकर सूर्य से अस्त हो तो उक्त परिणाम प्राप्त नहीं होतें अपितु शुक्र से संबधित पीडाऐं जातक के जीवन में आती है । यथा यदि शुक्र जातक की कुण्डली में वक्री हो तो ऐसे जातक का वैवाहित जीवन पीड़ाकारक होता है । इसी प्रकार जातक की कुण्ड़ली में शुक्र नीच राशि में अर्थात् कन्या राशि में हो तो ऐसे जातक के जीवन में निम्न स्तरीय स्त्रियों का समागम होता है जातक ऐसी महिलाओं के हाथों का खिलौना बन जाता है । ऐसे शुक्र के साथ यदि मंगल की युक्ति हो जाये तो जातक जीवन में निम्न स्तरीय महिलाओं से संबधों के कारण बहुत पीड़ाऐं पाता है । वैसे भी मंगल शुक्र की युक्ति जातक के लग्न द्वितीय, सप्तम एवं अष्टम भाव पर हो तो जातक में चारित्रिक दोष की सम्भवनाऐं बलवती हो जाती है । यदि किसी जातक की कुण्डली में उक्त भावों में मंगल–शुक्र की युक्ति हो तथा लग्नेश, पंचमेश, सप्तमेश एवं नवमेश की युक्ति हो जायें तो जातक स्वैच्छिक विवाह करता है । जातक की कुण्डली में शुक्र नीच राशि में अथवा पापप्रभाव में होकर षष्ठभाव में मंगल से युक्ति करता है तो जातक को शुगर से संबधित रोग होता है । शुक्र की नीचता या पापप्रभाव जातक के गुप्तांगों को रोगी बनाता है । **भरणी, पूर्वाफाल्गुनी एवं पूर्वाआषाढा नक्षत्र** शुक्र के नक्षत्र माने गयें है । इनमें से किसी नक्षत्र में जातक का जन्म होता है तो उसकें जीवन पर शुक्र का प्रभाव विशेष रूप से देखने को मिलता है ।

उपचारः–

जातक की कुण्डली में शुक्र लग्नेश, पंचमेश, नवमेश दशमेश होकर पाप्रभाव में हो अंशात्मक दृष्टिकोण से कमजोर हो सूर्य से अस्त हो अथवा शुक्र का षडबल कमजोर हो तो ऐसे जातक को न्यूनतम 57 सेन्ट का हीरा अथवा सवा सात रत्ती का अमेरिकन डायमन्ड(जर्किन) चांदी में अथवा प्लेटिनम में बनवाकर शुक्रवार के दिन लाभ शुभ अमृत के चौघडियें में सीधे हाथ की मध्यमा अंगुल में 'ऊ शुं शुक्राय नमः' के मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करना चाहिए । जिन जातकों की कुण्डली में शुक्र त्रिक भावों का स्वामी होकर योगकारक भाव में बैठा हो ऐसे जातकों को शुक्र का रत्न धारण नहीं करना चाहिए अपितु ऐसे जातकों को शुक्र के मंत्रों का जाप करना चाहियें । शुक्र के कुप्रभाव से बचने के लिए शुक्र से संबधित वस्तुओं का दान करना चाहिए यथा शुक्रवार के दिन पके हुये चावलों में शक्कर एवं घी मिलाकर बैल को खिलाना चाहिए । विधवा आश्रम में बेसहारों महिलाओं के रोजगार में सहयोग करना चाहियें । किसी काने व्यक्ति कों मिष्ठान खिलाना चाहिए ।

बुध:- जातक की कुण्डली में **बुध** की भूमिका उपलब्ध साधनों के सर्वोतम उपयोग हेतु महत्वपूर्ण रहती है । बुध प्रबन्धन का कारक है । बुध को वाणी का नैसर्गिक कारक ग्रह माना गया है । बुध से ननद एवं बुआ जैसे रिश्तों की भूमिका का आंकलन किया जा सकता है । बुध जातक के जीवन में न्यूरो सिस्टम का नियंत्रणकर्ता होता है । बुध जातक की चमडी, जातक की नसों एवं जातक के मस्तिष्क की सूक्षमता को इंगित करता है । बुध एक नपुसंक ग्रह है जिन ग्रहों की युक्ति एवं जिन ग्रहों से दृष्टि संबंध यह स्थापित करता है उन ग्रहों जैसा ही फल बुध भी देने लगता है । बुध शैशवकाल का ग्रह है । बुध जीरों अंश से ही अपना प्रभाव प्रारम्भ कर देता है । बुध मिथुन एवं कन्या राशि का स्वामी होता है । कन्या राशि में इसें उच्च का एवं मीन राशि में नीच का माना जाता है । विशोतरी पद्धति में बुध की महादशा 17 वर्ष की अवधि की मानी गई है । किसी जातक की कुण्डली में बुध मिथुन अथवा कन्या राशि का होकर केन्द्र में बैठा हो तो यह योग पंचमहापुरूष योग में से एक **भद्र योग** का निर्माण करता है । जिसकी कुण्डली में भद्रयोग का निर्माण हो रहा है ऐसा जातक वाणिज्य एवं प्रबन्धन क्षैत्र में अपना नाम कमाता है । बुध अपने मित्र सूर्य, शुक अथवा शनि से युक्त हो तो इसका बल ओर भी बढ़ जाता है । बुध एवं सूर्य की युक्ति **बुधादित्य योग** का निर्माण करता है । यदि जातक की कुण्डली में बुध एवं सूर्य दोनों ग्रह योगकारक होकर लग्न, पंचम, नवम अथवा दशम भाव पर बैठे हो जो ऐसा जातक एक्ज्यूकेटिक पद से अपनी आजिविका चलाता है । ऐसे जातक के पिता भी एक प्रसिद्ध व्यक्ति होते है । ऐसे जातक शासन में बैठकर नीति निर्धारणकर्ता होते है । बुध यदि अपने दूसरे मित्र शुक्र के साथ कुण्डली में योगकारक ग्रह होकर लग्न, चतुर्थ, पचम, नवम दशम अथवा एकादश भाव में हो तो यह स्थिति **लक्ष्मीनारायण राजयोग** का निर्माण करती है । ऐसे जातक को जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता । जातक का जीवन धनधान्य से परिपूर्ण रहता है । बुध के साथ शुक्र की युक्ति पुरूष जातक के दायों न महिला सहयोगी की सकारात्मक भूमिका को भी इंगित करती है । बुध के साथ शनि की युक्ति अथवा दृष्टि जातक की सोचने की क्षमता को तार्किकता

देती है । बुध एवं शनि की युक्ति वाला जातक सूक्ष्मतम बुद्धि वाला होता है । दूसरे शब्दों में जिस जातक की लग्न की कुण्डली में बुध एवं शनि का संयुक्त प्रभाव लग्न, पंचम अथवा दशम भाव पर हो तो ऐसा जातक **बाल की खाल** निकालने वाला होता है । ऐसे जातकों को न्यायायिक सेवाओं में ज्यादा सफलता मिलती है अर्थात बुध शनि की युक्ति वालें व्यक्ति यदि वकालत का पेशा अपनायें तो काफी सफल होते देखे गए हैं । बुध शनि एवं चन्द्रमा की युक्ति वालें लोग अधिक वाचाल होतें है । ऐसे लोग सदैव हास्य को ढूंढ़ने का प्रयास करतें हैं अर्थात ऐसे लोग हास्यकलाकार हो सकते है ।

उक्त के विपरीत बुध यदि पापप्रभाव में हो अर्थात् राहु–केतु से ग्रसित हो नीच राशि में हो बुध पापकर्तरी योग में हो तो जातक के जीवन में बुध से संबधित दुष्परिणाम सामने आते हैं । ऐसा जातक के जीवन में सही समय पर सही निर्णय का अभाव पाया जाता है । बुध के साथ साथ जातक का द्वितीय भाव में दूषित हो एवं द्वितीयेश भी पापप्रभाव में हो तो ऐसे जातक की वाणी में दोष होता है साथ ही ऐसा जातक अपनी बात दूसरों को समझाने में अक्षम होता है । पुरूष जातक की कुण्डली मे बुध के पापप्रभाव में होने से जातक की बहन एवं बुआ के जीवन में बडी पीड़ाऐं रहती है इसी प्रकार यदि स्त्री की कुण्डली में बुध के पापप्रभाव में होने से जातिका की ननद पीड़ित अवस्था में रहती है अथवा जातिका के जीवन में ननद का नकारात्मक पक्ष हावी रहता है । बुध वक्री हो अथवा पापप्रभाव में होकर लग्न कुण्डली के छठे अथवा आठवें भाव को दृष्टि अथवा युक्ति से प्रभावित करता है तो ऐसे जातक को जीवन में नसों से संबधित बीमारियों का सामना करना पडता है । जातक को साइटिका, स्पोन्लाइडिस, एवं तंत्रिका तंत्र से संबधित समस्याओं का सामना करना पडता है । बुध की उक्त स्थिति जातक के जीवन में चर्मरोग का कारक भी बनती है । जातक की कुण्डली में चन्द्र–राहु, चन्द्र–केतु, अथवा चन्द्र–शनि की युक्ति हो एवं ऐसे जातक की कुण्डली में बुधग्रह वकी हो अथवा पापप्रभाव में हो तो ऐसे जातकों को जीवन में मानसिक रोग का भी सामना करना पडता है । शनि–बुध–चन्द्रमा की युक्ति किसी कुण्डली में जातक के लग्न, सप्तम अथवा अष्टम भाव पर अपना प्रभाव डालती है तो ऐसे पुरूष जातक में पौरूषता का अभाव पाया जाता है । **अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती** बुध के नक्षत्र है । इनमें जन्म व्यक्ति का जीवन बुध से प्रभावित होता है ।

उपचारः–

किसी जातक की कुण्ड़ली में बुध लग्नेश पंचमेश, नवमेश अथवा दशमेश होकर पाप प्रभाव में हो अंशात्मक दृष्टि से कमजोर हो अथवा उसका षड़बल कमजोर हो तो ऐसे जातक को सवा सात रत्ती का पन्ना सोने में बुधवार के दिन सूर्योदय से तीन घंटों के अंदर 'ऊ बुं बुधाय नमः' मंत्र से अभिमंत्रित कर सीधें हाथ की कनिष्ठका अंगुली में धारण करना चाहियें । साथ ही नित्य प्रति गणेश जी की आराधना करनी चाहियें । हरें वस्त्रों एवं हरी वस्तुओं का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहियें । कुण्डली में यदि बुध त्रिक भावों अर्थात षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भाव का स्वामी होकर नीच राशि में हो पाप प्रभाव में हो तों ऐसे जातकों को बुध का रत्न धारण नहीं करना चाहियें अपितु ऐसे जातकों को नित्य प्रति गणेश जी की आराधना करनी चाहियें ।

प्रतिदिन ऊ बुं बुधाय नमः' मंत्र की एक माला जाप करनी चाहिए । बुध से संबधित वस्तुओं का दान करना चाहिए । यथा प्रतिदिन गाऐं को हरा चारा डालें । सवा पाव अथवा सवा किलो आखें(साबुत) मूंग गणेश जी के पुजारी को बुधवार के दिन दक्षिणा सहित दान करें साथ ही कांसें के पात्र का दान करना चाहिए । बुध से संबधित वस्तुओं का स्वयं न्यूनतम उपयोग करें । ऐसे व्यक्ति का अपनी बहन बेटी को सदैव प्रसन्न रखना चाहिए । समय–समय पर उन्हें उपहार देतें रहना चाहिए । उक्त उपचारों से बुध के दुष्प्रभावों में न्यूनता आती है ।

शनि:- **शनि** किसी जातक के जीवन में एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रह है । चूँकि शनि को न्यायाधीश की उपाधि से नवाजा गया है । शनि जातक के कर्मो के आधार पर फल प्रदान करता है । शनि से भयग्रस्त न होकर जातक को अपने कर्मो को सुधारना चाहिए। शनि जातक द्वारा कियें गयें दुष्कर्मो का उसें परिणाम देकर उसके जीवन को स्वच्छ करता है । शनि आयु का मूल कारक ग्रह माना गया है । शनि के पास जातक की हड्डियों, मेरूदंड एवं पैरों का स्वामित्व होता है । शनि मात्र एक ही ऐसा ग्रह है जो राजा को रंक बना सकता है एवं रंक को राजा । शनि कों लेकर कई भ्रान्तियाँ लोगों के मानस पटल पर रहती है जबकि यथार्य में शनि सिर्फ दंडाधिकारी ही नहीं है अपितु अच्छे कर्मो के सुफल भी शनि ग्रह प्रदान करते हैं । किसी जातक की चन्द्र राशि से शनि जब बाहरवें भाव में आता है तो शनि की साढ़े साती की स्थिति प्रारम्भ हो जाती है । प्रथम ढ़ाई वर्ष की अवधि अर्थात चन्द्र राशि से बाहरवें भाव में गोचर में शनि की स्थिति को चढ़ती साढें साती कहा जाता है। चन्द्र राशि पर शनि के भ्रमण को मध्य शनि साढे साती एवं चन्द्र राशि से आगें वाली राशि पर गोचर के शनि की स्थिति को उतरती साढ़े साती कहा जाता है । इसी प्रकार जब जातक की चन्द्र राशि से गोचर में शनि चतुर्थ एवं अष्टम भाव में हो तो इसे शनि की ढैयया कहा जाता है । चूकि शनि जातक के कर्मो के आधार पर फल देता है, इसीलिए शनि की ढैयया को लघुकल्याणी भी कहा जाता है । विशोंतरी महादशा पद्धति में शनि की 19 वर्ष की महादशा मानी गई है । शनि तुला राशि में उच्च का एवं मेष राशि में नीच का माना गया है । जातक की जन्म कुण्डली में शनि मकर, कुंभ अथवा तुला राशि में होकर केन्द्र में बैठा हुआ हो तो पंचमहापुरूष योग में से एक योग **शश योग** का निर्माण करता है । जिस जातक की कुण्डली में शश योग का निर्माण होता है एवं शनि जातक की कुण्डली में योगकारक भावों का स्वामी को तो शनि की ढैयया, शनि की साढ़े साती एवं शनि की महादशा में जातक को काफी उन्नति मिलती है । ऐसे समय जातक राजनीति एवं विदेश स्तर से संबंध बनाता है एवं जातक अकूत सम्पति वाहनादि का स्वामी बनता है । शनि योगकारक हो तो शनि की ढैयया, शनि की साढ़े साती एवं शनि की महादशा में जातक कई नये संयत्र स्थापित करता है । कल–कारखानों का स्वामी बनता है । शनि जातक को धीर गंम्भीर प्रवृति का बनाता है । शनि से प्रभावित व्यक्ति अनावश्यक वार्तालाप न कर अर्न्तमुखी प्रवृत्ति का होता है । शनि गोचर के समय किस प्रकार का प्रभाव देगा इस हेतु जन्मकालीन शनि को देखने के अतिरिक्त एक विधि यह भी प्रचलन में है कि जिस दिन गोचर में शनि का राशि परिवर्तन कर रहा हो उस दिन का चन्द्रमा आपकी चन्द्र राशि से किस स्थान पर है

इससे भी शनि की ढैयया या साढे साती का विश्लेषण किया जाता है । इसें शने की पाया विधि कहा जाता है । यदि शनि परिवर्तन के दिन का चन्द्रमा आपकी जन्म कुंडली के चन्द्रमा से प्रथम, षष्ठ अथवा एकादश भाव में हो तो ये शनि **स्वर्णपाद** में आया हुआ माना जायेगा । ऐसा शनि जातक को भौतिक प्रगति तो प्रदान करता है किन्तु शारीरिक पीड़ा भी देता है । स्वर्ण पाद में शनि का आना अच्छा नहीं माना जाता है । इसी प्रकार यदि शनि परिवर्तन के दिन का चन्द्रमा आपनी जन्म कुंडली के चन्द्रमा से द्वितीय, पंचम् अथवा नवम् में हो तो इसे **रजतपाद** में शनि का आना माना जाता है । रजत पाद में शनि का भ्रमण आनन्द दायक माना गया है । रजत पाद में शनि का भ्रमण उन्नतिकारक, भौतिक एवं शारीरिक सुखसुविधा प्रदानकर्ता माना जाता है । यदि शनि परिवर्तन के दिन का चन्द्रमा आपकी जन्म कुंडली के चन्द्रमा से तृतीय, सप्तम अथवा दशम में हो तो यह शनि तांबें के पाये में आया हुआ माना जाता है **तांबें के पाये** में शनि का भ्रमण में रजतपाद की तरह अच्छा माना जाता है किन्तु यदि शनि परिवर्तन के दिन का चन्द्रमा आपनी जन्म कुंडली के चन्द्रमा से चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश में हो तो शनि का यह भ्रमण **लौहपाद** में माना जाता है ऐसा शनि का गोचर सबसे निकृष्ट माना जाता है ऐसा कहा जाता है कि इस स्थिति में जातक को शनि अपने किये का परिणाम देता है । जातक दर–दर की ढोकरें खाने को मजबूर हो जाता है । आजीविका क्षैत्र बंद हो जातें है । जातक कों अपने अधीनस्थों से ही अपमानित होना पडता है । गोचर के उक्तानुसार भ्रमण में भी शनि के परिणाम जातक की जन्म कुण्डली में स्थित जन्मकालीन शनि की स्थिति पर ही निर्मर करते है यदि जातक की जन्म कुण्डली में शनि स्वराशि, मित्रराशि अथवा उच्च राशि में हो तो अच्छे परिणामों में कई गुना वृद्धि होती है एवं यदि शनि नीच राशि शत्रुराशि में हो तों पीड़ाकारक स्थितियॉ असहनीय होती है ।

किसी जातक की कुण्डली में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश अथवा दशमेश होकर नवम, दशम अथवा एकादश भाव में स्थिति अथवा दृष्टि से अपना प्रभाव डालता है तो ऐसा जातक तकनीकी क्षैत्र का जानकार होता है अथवा तकनीकी संस्थान से अपनी आजीविका कमाने वाला होता है । शनि की सकारात्मक स्थिति जातक की बुद्धि को सूक्ष्मता एवं दूरदृष्टिता देती है । शनि यदि दशम अथवा लग्न को स्थिति अथवा दृष्टि से प्रभावित करता हो साथ ही राहु की भूमिका भी लग्न कुण्डली में दशम तथा लग्न को प्रभावित करने वाली हो तो जातक शनि अथवा राहु की महादशा अर्न्तदशा में राजनीति से जुडता है एवं राजनैतिक क्षैत्र में सफलताएँ प्राप्त करता है । शनि यदि गुरू के साथ युक्ति कर जातक की लग्न कुण्डली के पंचम एवं नवम भाव को प्रभावित करते है तो ऐसा जातक आध्यात्मिकता की ओर अधिक रूझान रखता है । ऐसे जातक का मन भौतिक सुख–सुविधाओं के प्रति वैराग्यता का भाव रखता है । किन्तु यह स्थिति गुरू की महादशा में शनि की अर्न्तदशा में अथवा शनि की महादशा में गुरू की अर्न्तदशा में आती है । शनि की बुध के साथ युक्ति जातक की सोच को तीव्रता एवं तार्किकता देती है । शनि बुध की युक्ति से जातक तकनीकी क्षैत्र के प्रबन्धन में सफल होते देखे गये हैं । शनि शुक्र की युक्ति को जातक के भौतिक जीवन में उन्नतिकारक माना गया है किन्तु इस युक्ति से जातक के जीवन में चारित्रिक पतन की स्थितियॉ

उत्पन्न होती है । शनि एवं राहु को एक ही स्वभाव का ग्रह माना गया है। इन दोनों की युक्ति जातक को एक जैसा परिणाम देने वाली रहती है किन्तु शनि मंद ग्रह है एवं राहु तुरन्त गति से परिणाम देने वाले अतः जिन जातकों की कुण्डली में इन दोनों की युक्ति होती है ऐसे जातक अर्न्तद्वंद की स्थितियों में अधिक देखे गये हैं । विशेषतया यदि जातक की कुण्डली में ये युक्ति पंचम अथवा दशम भाव में हो तो जातक के आजीविका क्षैत्र में बार–बार परिवर्तन होता है । शनि को निर्माण एवं आवास का नैसर्गिक कारक ग्रह माना गया है अतः जातकों की कुण्डली में ये ग्रह नीच राशि अर्थात मेष राशि में अथवा वक्री अवस्था में हो तो ऐसे जातक अपने आवास का निर्माण नहीं कर पातें यदि निर्माण सम्भव भी हो तो ये स्वयं निर्मित मकान में निवास नहीं कर पातें । किसी जातक की कुण्डली में शनि चर्तुथेश से युक्त होकर लग्न कुण्डली के षष्ठ अथवा अष्टम भाव में बैठा हो तो जातक के जीवन में वाहन दुर्घटनाओं की अधिकता रहती है । षष्ठ अथवा अष्टम भाव में बैठा शनि यदि नीच राशि अथवा शत्रु राशि में हो तो जातक के जीवन में पैरों से संबधित तकलीफें देता है । किसी जातक की कुण्डली में शनि सूर्य की युक्ति है तो ऐसे जातक एवं उसकें पिता के सैद्धान्तिक मतभेद रहतें है। पिता–पुत्र के संबधों में सदैव तनाव बना रहता है । सूर्य की महादशा में शनि की अर्न्तदशा अथवा शनि की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा इन सम्बन्धों के लियें निकृष्टतम समय होता है । शनि–चन्द्रमा की युक्ति **विष योग** का निर्माण करती है । यदि ये युक्ति जातक की कुण्डली में लग्न में हो तो ऐसे जातक को जीवन में मनोरोग की स्थिति से गुजरना पडता है । यदि ये युक्ति कुण्डली के द्वितीय अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक के जीवन में फूडपॉइजनिंग की स्थिति बनाती है। शनि–चन्द्र की युक्ति जातक की कुण्डली के किसी भी भाव में हो विष योग के निर्माण के कारण ये युक्ति जातक की माता के लिये पीड़ाकारक होती है । शनि एवं मंगल दोनों क्रूर ग्रहों की श्रेणी में माने गयें है । यदि किसी जातक की कुण्डली में दोनों ग्रह युक्ति कर रहें हो तो जातक को उस भाव से संबधित क्षति उठानी पडती है । किसी स्त्री जातक की कुण्डली में शनि–मंगल की युक्ति उसके कुटुम्ब बसने में बाधक होती है । शनि–मंगल की युक्ति लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थिति जातक को दोहरा मंगल दोष देती है । पुष्य, अनुराधा एवं उत्तराभाद्रपदा शनि के नक्षत्र है । इनमें जन्में व्यक्ति मूलतः शनि से प्रभावित रहतें है ।

उपचारः–

किसी जातक की कुण्डली में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश अथवा दशमेश होकर अपने किसी शत्रुग्रह के साथ बैठा हो अंशात्मक दृष्टिकोण से कमजोर हो अथवा षड़बल में क्षीण हो तो ऐसे जातक को सवा पॉच रत्ती का नीलम पंचधातु (सोना,लोहा,तांबा,जस्ता एवं चांदी) में अथवा प्लेटिनम में बनवाकर शनिवार के दिन लाभ शुभ अमृत के चौघडियें में 'ऊ शं शनैश्चराय नमः' के मंत्रो से अभिमंत्रित कर उल्टे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिये । नीलम के उपरत्न के तौर पर जातक घोड़े की नाल की अथवा नाव के कील की अंगूठी को बनवाकर उक्त प्रकिया से धारण किया जा सकता है । उक्त के अतिरिक्त शनि के बीच मंत्र 'ऊ शं शनैश्चराय नमः' की

एक माला प्रतिदिन की जा सकती है । साथ ही शनिस्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें । यदि किसी जातक की कुण्डली में शनि अकारक ग्रह होकर पीड़ित अवस्था में हो तो ऐसे जातकों को शनि की पूजा के साथ–साथ शनि से संबधित वस्तुओं का दान करना चाहिये । यथा काले तिल, साबुत उडद,काला कपडा, सरसों एवं तिल्ली का तेल दान करना चाहिये । अपने आचरण को स्वच्छ रखना चाहिये । शनि की प्रसन्नता के लिये अपने अधीनस्थों को प्रसन्न रखना चाहिये । दीन–हीन गरीबों की सहायता करनी चाहिये ।

<u>राहू–केतुः–</u>

राहु केतु का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होने के उपरांत भी भारतीय ज्योतिष के हौरा ग्रथों में राहु केतु को ग्रह मंडल में शामिल किया गया है। चन्द्र कक्षा के दोनों सम्पात बिन्दुओं में से एक को राहु और दूसरे को केतु कहा जाता है । राहु केतु छायाग्रह है तथा इनका तमोगुणी स्वभाव है । राहु एवं केतु सदैव वक्री गति से भ्रमण करते हैं ये सदैव एक दूसरे से सप्तम स्थान पर होते हैं । इनका कार्यकाल एक राशि पर लगभग 18 महीनों का होता है । वैसे तो राहु केतु की कोई राशि नहीं है किन्तु आधुनिक ज्योतिष में राहु को कन्या राशि में एवं केतु को मीन राशि में स्वराशि का माना है । कुछ विद्धान राहु को वृष राशि में उच्च को एवं वृश्चिक में नीच का मानते हैं जबकि कुछ आचार्य राहु की उच्च राशि मिथुन एवं केतु की धनु मानते हैं । इसी प्रकार राहु वृश्चिक में नीच का एवं केतु वृष राशि में नीच का माना जाता है । इसी प्रकार कुछ विद्धानों द्धारा राहु को धनु में नीच का एवं केतु को मिथुन राशि में नीच का माना गया है । व्यवहार में यह देखा गया है कि राहु वृष,मिथुन एवं कन्या राशि में होकर जातक की लग्न कुण्डली में तृतीय, नवम एवं एकादश भाव में अच्छा परिणाम देता है । इसी प्रकार केतु वृश्चिक, धनु, एवं मीन राशि में होकर लग्न, तृतीय, नवम एवं एकादश भावों में बैठा हो तो अच्छे परिणाम देता है । राहु का मुख्य कार्य तुरन्त एवं शीघ्रगामी परिणाम देना होता है । राहु शेयर, सट्टेबाजार, चर्मरोग, कैंसर, एवं दादा का कारक ग्रह माना गया है । राहु को संबध ब्लैक मार्केटिंग एवं अनैतिक कार्यों से भी जोडा जाता है । राहु आधुनिक राजनीति के कारकग्रहों में एक मुख्य कारक ग्रह है । आर्द्रा, स्वाति एवं शतभिषा राहु के नक्षत्र माने गये हैं । इन नक्षत्रों में जन्में व्यक्तियों पर राहु का प्रभाव विशेष रूप से देखने को मिलता है । राहु एवं शनि के प्रभाव एवं परिणामों को एक जैसा माना जाता है किन्तु शनि मन्द गति वाला ग्रह एवं जो धीरे–धीरे जातक को परिणाम देता है जबकि राहु जल्दी से परिणाम देने वाला ग्रह है । शनि एवं राहु में एक मुख्य भेद ओर है शनि को दण्डाधिकारी का दर्जा दिया गया है ये जातक को उसके कर्मो के परिणाम देकर उसके जीवन को उज्जवल बनाने का कार्य करता है जबकि राहु जातक को अपराध की ओर ले जाता है । लग्न अथवा द्वितीय भाव में बैठा शत्रु राशि का राहु जातक से झूठ बुलवाता है ऐसे जातक विश्वसनीय नहीं होते इनके मन के अंदर कुछ ओर एवं मुँह पर कुछ ओर होता है । राहु एवं केतु मुख्यता सूर्य एवं चन्द्रमा से अपनी शत्रुता रखते हैं । लग्न में यदि राहु की चन्द्रमा से युक्ति हो तो ऐसे जातक के जीवन में मानसिक रोग की सम्भवनाएँ

बढ़ जाती है इसी प्रकार यदि सूर्य राहु की युक्ति जातक के लग्न में हो तो जातक के जीवन में उसके सिर पर चोट आती है अथवा ऐसा जातक सिरदर्द के रोग से पीड़ित रहता है । द्वितीय भाव में चंद्र राहु की युक्ति हो एवं कुटुम्ब का कारक ग्रह भी अर्थात् द्वितीयेश भी पीड़ित हो तो जातक को कुटुम्ब का सुख नहीं मिलता साथ ही यदि बुध पाप प्रभाव में हो तो जातक की वाणी में दोष प्रकट होता है । या तो जातक काफी विलम्ब से बोलता है अथवा बोलते समय हकलाता है या ऐसा जातक अपनी बात किसी अन्य के समक्ष रखने में अक्षम होता है । सूर्य–राहु की युक्ति जातक की लग्न कुंडली में द्वितीय भाव में होने पर उक्त परिणामों (चन्द्रमा–राहु) के साथ साथ जातक के दायें नैत्र में भी पीड़ा होती है । चन्द्र–राहु की युक्ति जातक की लग्न कुण्डली में तृतीय भाव पर होने से जातक की माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहता है क्योंकि मॉ का कारक ग्रह चन्द्रमा अपने से बाहरवें भाव में अपने शत्रु के साथ बैठा होता है । साथ ही ऐसे जातक में बल–पराक्रम की कमी पाई जाती है । जातक को या तो अपने से छोटे बहन–भाइयों को खोना पड़ता है अथवा उनसे सैद्धान्तिक मतभेद बने रहते हैं । सूर्य–राहु की युक्ति तृतीय भाव में होने से जातक के अपने पिता से मतभेद रहता है साथ ही ऐसे जातक में बल पराक्रम की कमी पाई जाती है । जातक को या तो अपने से छोटे बहन–भाइयों को खोना पड़ता है अथवा उनसे सैद्धान्तिक मतभेद बने रहते हैं । चतुर्थ भाव में राहु चन्द्रमा की युक्ति जातक को मानसिक रूप से विचलित रखती है ऐसे जातक का मन अस्थिर रहता है । जातक के मॉ का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहता है जातक अपने आवास के अन्दर अनमना सा रहता है । ऐसे जातक की देर सवेर अपनी जन्म भूमि अवश्य छूटती है । जातक के मनोरोगी होने की सम्भावनाएँ रहती हैं । सूर्य–राहु की युक्ति कुण्डली के चतुर्थ भाव में होने से जातक अशांत चित्त का होता है एवं ऐसे जातक को भी अपनी जन्म भूमि से कई अन्यत्र जाना पडता है । चन्द्र–राहु की युक्ति कुण्डली के पंचम भाव में होने से जातक की उच्च शिक्षा में व्यवधान आता है यदि पंचमेश एवं शिक्षाकारक ग्रह गुरू पापप्रभाव में हो तो ऐसा जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करने में विफल रहता है । जातक के विचारों में नकारात्मकता की अधिकता पाई जाती है । जातक को प्रथम संतान से संबधित पीड़ा भोगनी पड़ती है । इसी प्रकार यदि पंचम भाव में सूर्य–राहु की युक्ति हो तो चन्द–राहु के समान परिणाम प्राप्त होते है साथ ही ऐसे जातकों के स्वभाव में उग्रता पाई जाती है । षष्ठ भाव में चन्द्र–राहु की युक्ति जातक को शीत सम्बन्धी रोग देते हैं ऐसे जातक के जीवन में जलाघात की संभ्भावनाएँ भी बढ़ जाती है जातक को जलोदर रोग होने की स्थिति रहती है । षष्ठ भाव में चन्द्र–राहु की युक्ति जातक के ननिहाल पक्ष के लिये पीड़ाकारक होती है ऐसे जातकों के या तो ननिहाल पक्ष से संबध अच्छे नहीं रहते अथवा जातक के जन्म के पश्चात ननिहाल पक्ष में पीड़ाओं की सम्भावनाएँ बनी रहती हैं । इसी प्रकार षष्ठ भाव मे सूर्य–राहु की युक्ति जातक के जीवन में शासन–सत्ता से पीड़ा को इंगित करती है साथ ही ऐसे जातक के जीवन में सिर एवं बालों से संबधित रोग की संभावनाएँ अधिक रहती है जातक के पिता का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता । सप्तम भाव में चन्द्र–राहु की युक्ति जातक के जीवन साथी के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के कारण वैवाहिक जीवन में बाधाकारक होती है । ऐसे जातकों के एक से अधिक सगाई अथवा वैवाहिक सम्बन्ध होने की संभावनाएँ बलवती होती है । सप्तम भाव में सूर्य–राहु की युक्ति

जातक के जीवन साथी के उग्र स्वभाव के कारण एवं बड़ी स्वास्थ्य संबधी समस्याओं के कारण वैवाहिक जीवन बाधाकारक होता है । अष्टम अर्थात् आयु भाव में चंद्र–राहू अथवा सूर्य–राहु की युक्ति आयु का ह्रास करती है । ऐसे जातकों के जीवन में अकस्मात दुर्धटनाओं की स्थिति बनती है । तथा चंद्र–राहु अथवा सूर्य–राहु का अंशात्मक योग निकटतम हो तो यह दुर्घटना जानलेवा भी साबित हो सकती है । नवम भाव में चन्द्र–राहु अथवा सूर्य–राहु की युक्ति जातक को भाग्यहीन बनाती है यदि भाग्येश भी लग्न कुण्डली में निर्बल हो तो जातक का जीवन संघर्षमय हो जाता है । दशमभाव में चन्द्र–राहु अथवा सूर्य–राहु की युक्ति हो एवं दशमेश भी निर्बल हो तथा दशम भाव पर शुभग्रहों का प्रभाव न हो तो जातक को आजिविका क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पडता है । जातक को जीवन में या तो पिता का साथ नहीं मिलता यदि मिलता है तो उनमें आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होते हैं । ऐसे योग के जातक को जीवन में कई बार अपमान का सामना करना पड़ता है । एकादश भाव में चन्द्र–राहु अथवा सूर्य–राहु की युक्ति जातक के वित्तीय कोष पर कुप्रभाव डालती है । यदि आयेश कमजोर हो तो ऐसा जातक धन का संग्रह नहीं कर पाता । उक्त स्थितियों के साथ साथ यदि गुरू भी पापप्रभाव में हो, निर्बल हो तो जातक के अपने बडे भाई से संबध अच्छे नहीं रहते हैं । द्वादश भाव में चन्द्र–राहु एवं सूर्य–राहु की युक्ति जातक के शैयया सुख में बाधक रहती है । ऐसे जातकों को यात्राओं में पीड़ा का सामना करना पड़ता है । उक्त युक्ति जातक में नैत्र दोष का कारण भी बनती है । किसी जातक की कुण्डली के लग्न पंचम अथवा नवम भाव में चन्द्र–राहु , सूर्य–राहु, चन्द्र–केतु, अथवा सूर्य–केतु की युक्ति हो कुण्डली में पितृदोष को इंगित करती है । पराशरीय पद्धति में राहु की 18 वर्ष की महादशा मानी गई है एवं केतु की महादशा 7 वर्ष की होती है । चन्द्र–केतु एवं सूर्य–केतु की भी विभिन्न भावों मे युक्ति का फल राहू के फलों के अनुरूप होता है । केतु जातक की कुण्डली में मित्र राशि, स्वराशि अथवा उच्च राशि में होकर लग्न में बैठा हुआ हो तो ऐसा जातक डिपलोमेटिक होता है । ऐसे जातकों के उच्चाधिकारियों से सम्पर्क होते हैं। समाज के गणमान्य व्यक्तियों में ऐसे जातकों का व्यवहार होता है इसी प्रकार यदि केतु लग्न कुण्ड़ली में उक्त राशियों में होकर लग्न कुण्ड़ली के तृतीय, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो ऐसे जातकों को जीवन में काफी उन्नति मिलती है । शास्त्रों में ऐसा निहित है कि यदि केतु एवं गुरू जातक के द्वादश भाव को स्थिति अथवा दृष्टि से प्रभावित करते हैं तो ऐसे जातक का मोक्ष का जीवन होता है । अर्थात् ऐसा जातक जन्म मरण की श्रृंखला से मुक्त हो जाता है । उक्त के विपरीत यदि लग्न कुण्ड़ली में केतु की स्थिति अच्छी न हो अर्थात् केतु नीच राशि अथवा शत्रु राशि (कर्क, सिंह आदि) को होकर पंचम, षष्ट, सप्तम, अष्टम आदि भावों में बैठा हो तो जातक को अपनी महादशा अर्न्तदशा में काफी पीड़ाऐं देता है । पंचम मे बैठा केतु जातक को मति भ्रम देता है ऐसे जातक की शिक्षा में व्यवधान आते हैं जातक को आगे वंश चलाने में पीड़ा आती है । षष्ठ अथवा अष्टम भाव में बैठा केतु जातक को अपनी महादशा अर्न्तदशा में पेट संबधी रोग देता है ऐसा जातक पाइल्स, फीशर आदि बीमरियों से भी ग्रसित रहता है । मघा, मूला एवं अश्विनी केतु के नक्षत्र हैं इन नक्षत्रों मे जन्म लेने वाले जातकों के जीवन पर केतु क विशेष प्रभाव रहता है । राहु एवं केतु की पंचम ,सप्तम एवं नवम पूर्ण दृष्टियॉ होती है ।

उपचारः–

किसी जातक की कुण्डली में राहु यदि स्थिति अथवा दृष्टि से मारक स्थान अर्थात् द्वितीय सप्तम अथवा अष्टम भाव को प्रभावित न कर रहा हो तो राहु के उपचारार्थ जातक को गौमूत्र रंग का सवा पॉच रत्ती का गोमेद पंचधातु (सोना, लौहा, चादी, तॉबा एवं जस्ता) में बनवाकर उल्टे हाथ की मध्यमा अंगुली में शुक्रवार के दिन लाभ, शुभ, अमृत के चौघडिये में 'ऊ रां राहवें नमः' के मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करवाना चाहिये। एवं ऐसे जातक जिनका राहु उपचार योग्य हो उन्हें 'ऊ रां राहवें नमः' के मंत्र की एक माला नित्य प्रति करनी चाहिये । जातक की कुण्डली में राहु की स्थिति ऐसी हो कि वो मारक भाव में बैठा हो अथवा अपनी दृष्टि से जातक की कुण्डली के मारक भाव को प्रभावित कर रहा हो तो ऐसे जातकों कों में 'ऊ रां राहवें नमः' के मंत्र की एक माला प्रतिदिन करनी चाहिये साथ ही राहु से संबधित वस्तुओं का दान करना चाहिये । यथा काला कंबल, काले कपड़े आदि का दान राहु के निमित्त किया जा सकता है । राहु से पीड़ित व्यक्ति प्रत्येक अमावस्या के दिन उड़द की दाल के बड़े बनाकर उस पर दही डालकर अमावस्या के दिन यदि उन बड़ो को कौवों को खिलाएँ तो इससें राहु की नकारात्मकता क्षीण होती है । राहु की शांति के लिये जातक को भैरव आराधना करनी चाहिये साथ ही काले कुत्ते को रोटी,ब्रेड,बिस्कुट आदि खिलाने से भी राहु की प्रतिकूलता को न्यून किया जा सकता है । राहु से होने वाली पीड़ा की न्यूनता के लिये काली चीटियों को चुग्गा भी डाला जा सकता है ।

विशेषः– किसी जातक की कुण्डली में राहु की नकारात्मकता को कम करने का सबसे महत्वपूर्ण उपचार यह है कि जातक को बुधवार सांय 4.30 से 6.00 के मध्य सीसे (Lead) *की अगूंठी तैयार कर उल्टे हाथ की मध्यमा अंगुली मे* ऊ रां राहवें नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करवायें । जातक की कुण्डली में राहु की स्थिति एवं दृष्टि कैसी भी हो उक्त उपचार प्रयुक्त किया जा सकता है । उक्त उपचार में सीसे की अंगूठी लम्बे समय तक नहीं चलती है अतः अंगूठी टूटने पर पुनः उसी प्रक्रिया से अंगूठी धारण करवाई जा सकती है । उक्त के अतिरिक्त यदि किसी जातक की कुण्डली में राहु उपचार योग्य है तो ऐसा जातक किसी निराश्रित कन्या के विवाह में सहयोग दे एवं कन्यादान करें तो भी राहू की नकारात्मक को काफी हद तक न्यून किया जा सकता है । राहु की पीड़ाओं से निवृति के लिये शिव आराधना सर्वश्रेष्ठ उपचार है ।

किसी जातक की कुण्डली में केतु यदि स्थिति अथवा दृष्टि से मारक स्थान अर्थात द्वितीय, सप्तम अथवा अष्टम भाव को प्रभावित न कर रहा हो तो केतु के उपचारार्थ जातक को सवा पॉच रत्ती का लहसुनियॉ पंचधातु (सोना, लोहा, चादी, तॉबा एवं जस्ता) में बनवाकर उल्टे हाथ की मध्यमा अथवा कनिष्ठका अंगुली में मंगलवार के दिन लाभ, शुभ, अमृत के चौघडिये में 'ऊ कें केतवे नमः' के मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करवाना चाहिये । साथ ही ऐसे जातकों को ऊ कें केतवे नमः

के मंत्र की एक माला रोज जाप करनी चाहिये । जिस जातक की कुण्डली में केतु की स्थिति अथवा दृष्टि जातक की कुण्डली के मारक भावों को प्रभावित करने वाली हो तो ऐसे जातक को 'ऊ कें केतवे नमः' मंत्र की एक माल रोज जाप करनी चाहिये साथ ही ऐसे जातक केतु से संबधित अन्य उपचार कर सकते हैं । ऐसे जातकों को किसी धर्मस्थान पर जाकर कबूतरों को ज्वार का दाना डालना चाहिये। ऐसे जातक धारीदार उनी कंबल गरीबों को वितरित कर सकते हैं । केतु के उपचारार्थ मंदिर में ध्वजा लगवाई जा सकती है । नदी–तालाब में जाकर मछलियों को आटा डालना चाहिये साथ ही लाल चीटियों को चुग्गा डाला जा सकता है ।

विशेषः– केतु के उपचारार्थ एक सटीक उपचार यह भी है कि जिस जातक की केतु की महादशा चल रही हो अथवा केतु के प्रभावों से जातक पीड़ित हो तो ऐसे जातक को तीन तार सोना, चॉदी,तांबा की एक मुद्रिका गुथंवाकर पूर्णिमा के दिन उल्टे हाथ की अनामिका अंगुली में लाभ, शुभ, अमृत के चौघड़िये में अभिमंत्रित कर धारण करना चाहिये। इससे केतु के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है । केतु की पीड़ाओं से निवृत्ति के लिये **गणेश आराधना** सर्वश्रेष्ठ उपचार है ।

द्वाराः– रविन्द्र कुमार वधवा
'शिवाशीष' मकान न0 65,
न्यू कॉलोनी, बूंदी